शोध-चिंतन पत्रिका : सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई शोध पत्रिका
अंक : 1; जूलाई-दिसंबर, 2020; पृष्ठ संख्या : 88-94

माधव कंदलि के रामायण में राम

अनन्या दास

शोध-सार

राम हिंदू धर्म के देवता विष्णु के सप्तम अवतार हैं। हिंदू धर्म में राम अत्यंत जनप्रिय देवता हैं। बड़ी संख्या में लोग भारत और नेपाल सहित अन्य देशों में खासकर दक्षिण एशिया और दक्षिण-पूर्व एशिया में देवता के रूप में राम का अत्यधिक महत्व है। इनकी पूजा करते हैं। हिंदू धर्म में उपासनाकेंद्रिक संप्रदायों में राम को विष्णु के अवतार न मान कर सर्वोत्तम ईश्वर के रूप में माना जाता है। राम ने सूर्यवंश में (इक्षाकु वंश तथा परवर्तीकाल में उक्त वंश के राजा रघु नाम से रघुवंश में परिचित हुआ) जन्म लिया था। वैष्णव संप्रदाय में जिन जनप्रिय देवताओं की आराधना की जाती है, उनमें राम अन्यतम हैं। हिंदू धर्म में राम अंतहीन प्रेम, साहस, शक्ति, भक्ति, कर्तव्य-निष्ठा तथा मूल्यबोध के देवता के प्रतीक हैं। राम को लेकर संसार की अनेक भाषाओं में कथाएँ लिखी गयी हैं। हिंदी सहित भारत की अनेक भाषाओं में भी राम कथा लिखने की एक प्राचीन परंपरा है। असम में शंकर-पूर्व युग में ही माधव कंदलि ने रामायण लिखा था। उनका रामायण पाँच खंडों का है। प्रस्तुत अध्ययन के द्वारा असमीया साहित्य की अन्यतम कृति माधव कंदलि के रामायण के राम के स्वरूप पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

बीज शब्द: *माधव कंदलि, रामायण, राम*

प्रस्तावना

असमीया भाषा-साहित्य की गद्य और पद्य दोनों ही विधाएँ अत्यंत समृद्धिशाली हैं । असमीया भाषा में काव्य लिखने की परंपरा अत्यंत प्राचीन है । माधव कंदलि का रामायण असमीया के लिखित साहित्य का अन्यतम निदर्शन है । 15वीं सदी में माधव कंदलि ने असमीया भाषा में रामायण की रचना की थी । हम यह जानते हैं कि रामायण का मूल महाकवि बाल्मीकि के संस्कृत में लिखित रामायण है । कंदलि के रामायण को बाल्मीकि रामायण का असमीया संस्करण भी कहा गया है । निश्चित रूप से कथा की दृष्टि से कंदलि रामायण और बाल्मीकि रामायण में सादृश्य अधिक है; पर जहाँ तक वैषम्य का सवाल है, कंदलि के रामायण में असमीया समाज और संस्कृति का स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है । असमीया भाषा और साहित्य के विकासकाल में कंदलि ने रामायण जैसे महाकाव्य की रचना करने का एक महान कार्य किया । कंदलि का रामायण असमीया भाषा के प्रारम्भिक समय की उत्कृष्ट रचना है । इसलिए कंदलि के रामायण के राम के चरित्र का विश्लेषण करना महत्वपूर्ण है ।

प्रस्तुत शोध-पत्र को विश्लेषणात्मक पद्धति से प्रस्तुत किया गया है । असमीया भाषा में 'स' उच्चारणवाले दो वर्ण हैं- 'च' और 'छ' । असमीया भाषा में स के लिए कोमल ह का उच्चारण होता है । असमीया के 'स', 'च' और 'छ' इन तीनों वर्णों के लिए हिंदी लिप्यंतरण में क्रमशः 'स', 'च' और 'छ' रखे गए हैं । हिंदी भाषा के 'य' वर्ण के लिए असमीया भाषा में दो वर्ण चलते हैं - एक का उच्चारण 'य' ही है और दूसरे का उच्चारण 'ज' होता है । असमीया 'य' के लिए हिंदी में भी 'य' रखा गया है, पर असमीया के 'य' के 'ज' वाले उच्चारण के लिए लिप्यंतरण में 'य़' रखा गया है ।

विश्लेषण

आदिकवि बाल्मीकि ने आदिकाव्य रामायण की रचना से भक्ति की जो अमृतधारा भारत में बहायी थी, उसकी धारा भारत की सीमा का अतिक्रमण कर समग्र विश्व में प्रवाहित हो गयी थी । बाल्मीकि रामायण के राम के चरित्र ने सिर्फ भारत के लोगों को ही नहीं, बल्कि विश्व के विभिन्न देशों के लोगों को भी आकर्षित किया था । रामायण की कहानी की इतनी लोकप्रियता के बाद भी संस्कृत न जाननेवाले लोगों के लिए रामायण के रसास्वादन में कुछ असुविधाएँ आयी थीं । आम लोगों को अपनी भाषाओं में रामकथाओं के आनंद से आनंदित कराने के लिए भक्त कवियों ने अपनी प्रादेशिक भाषाओं में रामायण का अनुवाद किया था । इन कवियों ने अपनी दृष्टि और पारंपरिक दृष्टि से बाल्मीकि रामायण की कहानी के आधार पर प्रादेशिक भाषाओं में अनुवाद, भावानुवाद करते समय मूल कहानी से हट कर, मौलिकता एवं आंचलिकता के रंगों से रंजित कर रामकथा की रचना की थी। राम को विष्णु के अवतार के रूप

में प्राय: सभी प्रादेशिक रामायण में माना गया है। प्रादेशिक भाषाओं में रचित सभी रामायणों में विविधता दिखाई पड़ती है।

भारतवर्ष में जितने प्रदेश हैं, प्रादेशिक रामायण की संख्या भी प्राय: उतनी ही है। भारतवर्ष की अनेक आंचलिक भाषाओं में रामायण लिखे गए हैं। बांग्ला में जिस तरह कृत्तिबासी रामायण का नाम है, ठीक उसी तरह असमीया में माधव कंदलि के रामायण को जाना जाता है।

14वीं सदी में असम के पश्चिम के कमतापुर और पूर्वमध्य अंचल, कछारी बराह राजा की राजधानी असमीया साहित्य की चर्चा का केंद्र स्वरूप थी। प्राक-शंकरी युग के श्रेष्ठ कवि कविराज माधव कंदलि प्राचीन असम के पूर्व मध्यांचल के अधिपति बराह राजा महामाणिक्य के राजकवि थे। उत्तर भारत की प्रांतीय भाषाओं में रचित रामायणों में माधव कंदलि का रामायण ही प्राचीनतम है। माधव कंदलि के रामायण की रचना के प्राय: सौ वर्षों बाद हिंदी, बांग्ला, उड़िया आदि भाषाओं में रामायण लिखे गये। लेकिन इतना प्राचीन होने के बावजूद भी माधव कंदलि की भाषा और रचना शैली में कोई भी कमी अथवा अक्षमता दिखाई नहीं देती है। वरन उनकी सहज-सरल भाषा और शैली में एक पूर्ण विकसित साहित्यिक रूप का निदर्शन मिलता है। उनके अमूल्य साहित्यिक रूप ने एक धारावाहिक राम-साहित्य-परंपरा का स्पष्ट आभास दिया है।

बाल्मीकि के रामायण से कंदलि की दृष्टि कदापि नहीं हटी है और न ही दूसरे पुराणों अथवा उप-रामायण की राम-कथा अथवा उनके प्रसंगों से कवि प्रभावित हुए थे। बाल्मीकि के वर्णन को ही कंदलि ने असमीया रूप दिया है। माधव कंदलि कृत रामायण अयोध्याकांड से लेकर लंकाकांड तक सीमित है और बाकी दो कांड क्रमशः महापुरुष शंकरदेव और माधवदेव ने लिखे थे। मूल रामायण से असमीया में अनुवाद करते समय जो नीति अपनायी गयी थी, उस संबंध में माधव कंदलि ने लिखा है -

बाल्मीकि ये महाऋषि रामायण प्रकाशिल
संसारत स्रजिल अमृत।
आक शुनि नरलोक कलित सद्गति होक
आक शुनि होवे कृत्यकृत्य ॥ 4846
माधव कंदलि बिप्रे ताहान चरण स्मरि
करिलंत श्लोकक उद्धार।
रामर चरण बिना आन गति नाहि हेरा
जानिबाहा मने करि सार ॥ 4847

(दत्तबरुवा2016:330)

(भावार्थ- वाल्मीकि महर्षि हैं, उन्होंने रामायण की रचना कर संसार में अमृत बरसाया है। उसे सुनकर कलियुग में लोगों को सद्गति मिलें। वे धन्य हों। माधव कंदलि ने उनका स्मरण कर उनके श्लोकों का उद्धार किया। राम के चरणों के बिना दूसरी और कोई गति नहीं है। यह जानकर राम के चरणों को मन में धारण कर लीजिए।)

आगे हम कंदलि कृत रामायण के पांचों खंडों में चित्रित राम के चरित्र पर चर्चा करेंगे।

अयोध्याकांड में राम

माधव कंदलि द्वारा रचित इस कांड का प्रारम्भ राम के राज्याभिषेक के आयोजन से हुआ है। इसमें राम के राज्याभिषेक केवल आयोजित ही हुआ था; लेकिन सम्पन्न नहीं हो पाया था। इसके विपरीत, राम को सीता और लक्ष्मण सहित वनवास जाना पड़ा। दासी मंथरा की कूटनीति में आकर मंझली रानी कैकयी अर्थात् भरत की माँ ने राजा दशरथ से यही वर मांगा था कि राम चौदह वर्षों के लिए वनवास जाए और भरत अयोध्या का राजा बने। राम आदर्शवादी थे। इसीलिए राम ने अपने पिता राजा दशरथ के आदेश का पालन किया और सब कुछ त्याग कर वनवास चले गए। वनवास जाते समय उन्होंने अपने पिता दशरथ से कहा था -

प्रदक्षिण करि रामे बुलिलन्त बाणी।
आमार जीवन येन पद्मपत्र पानी ॥
पितृदेव तोमार सत्यक रक्षा करि।
निश्चये चलिबो बन राज्य परिहरि ॥ 1908

(दत्तबरुवा2016:129)

(भावार्थ- प्रदक्षिण करते हुए राम ने कहा- मेरा जीवन कमल के पत्तों के पानी जैसा है। हे पिता, आपके सत्य की रक्षा के लिए मैं निश्चय ही राज्य का त्याग कर वन जाऊँगा।)

राम प्रजा के इतने प्रिय थे कि रामविहीन अयोध्या त्याग कर सब प्रजागण वन की ओर निकल पड़े। कंदलि ने यहाँ तक कहा है कि संसार वैरागी योगी भी राम के शोक में उनके पीछे-पीछे चलने लगे थे। भरत ने राम को रोकने की अनेक चेष्टाएँ की थीं; परंतु वनवास जाने से उन्हें रोक नहीं पाया। उन्होंने राम को अपने पिता के आदेश को ही अपना धर्म माना और भरत ने भी राम के 'चरण चिह्न' से ही अपना राजकाज संभाला।

अरण्यकांड में राम

अरण्यकांड का प्रारम्भ मूल रामायण से थोड़ा भिन्न है। इस कांड में राम के पराक्रम का वर्णन किया गया है। जब राम चित्रकूट में रहने लगे थे, तब राक्षसों ने वहाँ बड़ी अशांति फैलायी थी और बाद में राम ने उन सबसे युद्ध करके आश्रम को अशांति से मुक्त किया। उसके बाद शूर्पनखा के प्रेम-प्रस्ताव को लक्ष्मण ने ठुकरा कर रावण से शत्रुता कर ली और रावण ने अपनी बहन के अपमान का बदला लेने के लिये भिक्षुक वेश में आकर सीता का हरण किया था। सीता हरण के बाद राम की करुण दशा का वर्णन कंदलि ने इस प्रकार किया है -

त्रिदश देवता सबाको संबुधि
क्रोधे बुलिलंत बाणी।
येवे भाले भाले याइबे जानकीक
एतिक्षणे दिया आनि ॥
नुहि त्रिदशक एहि शर मारो
आजि सबे मान सारो।
समस्ते नागक संहरो सकले
पातालपुर बिदारो ॥ 3324

(दत्तबरुवा2016:225-226)

(भावार्थ - त्रिदस देवों को सम्बोधित कर राम ने क्रोधित होकर कहा- इसी क्षण जानकी को ला दीजिए। नहीं तो आपलोगों को इसी वाण से मार डालूँगा । समस्त नागों का संहार कर मैं पातालपुर का विनाश करूँगा।)

इस कांड में राम एक तरफ राक्षसों के ऊपर पराक्रम दिखाते हैं और दूसरी तरफ एक असहाय प्रेमी की भाँति सीता के विरह में तड़पते हुये दिखाई देते हैं। राम उपायहीन होकर सीता को अरण्य में खोजने लगते हैं। इस कांड में राम को एक सामान्य पुरुष के रूप में दिखाया है, जो अपनी पत्नी के शोक में व्याकुल होकर घूम रहे हैं।

किष्किंधाकांड में राम

कथा के अनुसार किष्किंधा वानरों का राज्य था और वहाँ का महाराजा महावीर बाली था। दुंदभी नामक एक असुर का वध करने के लिए बाली और उनके भाई सुग्रीव दोनों ने मिलकर युद्ध किया था। लेकिन बाद में दोनों भाइयों के बीच मतभेद हो गया। राम अपनी पत्नी सीता को लाने के लिए एक महान सेना की खोज कर रहे थे, जहाँ उनकी मुलाक़ात सुग्रीव से हुई। राम और लक्षण को निकट से जानने के लिए सुग्रीव ने हनुमान को भेजा था और हनुमान को सब कुछ पता चलने के बाद सुग्रीव ने अग्नि को साक्षी मान कर राम के साथ मित्रता की। सुग्रीव ने राम को बाली और उनके बीच हुए युद्ध के बारे में सब कुछ बताया। अंत में राम ने सुग्रीव और बाली के बीच युद्ध करवाया, जिसमें उन्होंने छल से बाली का बध किया था। लेकिन कंदलि ने अपने इस कांड में राम को दोषी नहीं माना है। बल्कि उन्होंने अपने काव्य कौशल से यह कहा है कि तारा के अपिशाप देते वक्त बाली की मृत्यु नहीं हुई थी और अभिशाप के उत्तर स्वरूप बाली ने यह स्वीकार किया था कि जो हुआ वह केवल विधि का विधान था। राम उसके लिए दोषी नहीं हैं। विधि का विधान मानकर परिस्थिति के साथ मिलकर कर्तव्यरत होना ही सबका कर्तव्य है। मृत्यु से पहले बाली ने राम से प्रार्थना की-

प्रणामोहो रामचन्द्र करि हातयोर।
अल्पमति तरल बानर मुखपोर॥
शरबिषे यतेक करिलो खिलिंकार।
इसब दोषक प्रभु क्षेमिबा आमार॥ 3676

(दत्तबरुवा2016:250)

(भावार्थ- हाथ जोड़ते हुए रामचंद्र को प्रणाम करता हूँ। मैं अल्पमति वानर हूँ। मैंने वाण से आपको जो भी आघात किया, हे प्रभु, आप मेरे उन दोषों की क्षमा करें।)

राम ने भी बाली की प्रार्थना स्वीकार की और उसकी शंका का निदान किया-

बालीक प्रबोधि पाचे मातिलंत राम।
भार्यार पुत्रर शोक करा उपशाम॥
तोमात अधिक करि सुग्रीवे पालिब।
अभिनंदा भावे राजभोगे काल निब॥ 3679

(दत्तबरुवा2016:250)

(भावार्थ- राम ने बाली को प्रबोध देते हुए कहा- तुम भार्या और पुत्र के शोक का निदान

करो । सुग्रीव तुमसे भी अधिक स्नेह से उनका पालन करेगा। वे राजभोग करेंगे ।)

इस कांड में राम की बुद्धिमत्ता का परिचय मिलता है । इसका प्रमाण स्पष्ट रूप से बाली और सुग्रीव के युद्ध के समय दिखाई देता है । देखने में एक जैसे होने के कारण युद्ध के समय बाली और सुग्रीव को पहचानने में कष्ट हो रहा था, तब राम ने सुग्रीव को पहचानने के लिए उसे एक फूल का हार पहना दिया था ।

सुंदराकांड में राम

यह कांड रामायण का सबसे सुंदर कांड है । कंदलि ने उनकी रचना में कहा है-

सुंदर श्रीरामचन्द्र सुंदर लक्ष्मण
सुंदर ये सुग्रीव सुंदर कपिगण ॥
सुंदर जानकी सीता जगतर आइ
सुंदराकांडत किछु असुंदर नाइ ॥ 3997

(दत्तबरुवा2016:273)

(भावार्थ- रामचंद्र सुंदर हैं, लक्ष्मण भी सुंदर है, सुग्रीव सहित सारे वानर भी सुंदर हैं । जगतजननी सीता भी सुंदरी हैं । सुंदराकांड में कुछ भी असुंदर नहीं है ।)

रामायण के विषय में अनेक समालोचकों के व्याख्यानुसार 'राम' शब्द का अर्थ है- सुंदर, रमणीय । इस प्रकार राम के अनुगामी हैं - लक्ष्मण, सुग्रीव और समस्त वानर सेना । दुर्विनीत तथा दुर्दांत रावण संस्कृति के विनाश कर राम संस्कृति की प्रतिष्ठा के लिए सब राम के पीछे खड़े हो गये । क्योंकि संस्कृति के बिना समाज अधूरा रहता है, संस्कृति के बिना कोई भी मनुष्य सुंदर नहीं हो सकता । इस कांड में त्याग और आदर्शवाद का सम्पूर्ण चित्रण हुआ है । इसलिए कंदलि ने कहा है कि 'सुंदरकांडत किछु असुंदर नाइ' । अर्थात् सुंदराकांड में कुछ भी असुंदर नहीं । इस कांड में राम के मन में हर्ष-विषाद की भावना का उदय होता है । हर्ष इसलिए कि सीता सुरक्षित हैं और विषाद इस प्रश्न से है कि समुद्र पार करके सीता को कैसे लायेंगे । इस कांड में राम को एक साधारण मनुष्य के रूप में दिखाया गया है । जिस प्रकार एक साधारण पुरुष अपनी पत्नी की सुरक्षा के बारे में चिंता करता है, उसी प्रकार राम भी सीता के बारे में सोचकर चिंतित हो उठे हैं ।

लंकाकांड में राम

कंदलि द्वारा रचित रामायण का लंकाकांड अत्यंत महत्वपूर्ण है । इस कांड का प्रारम्भ 'बोला राम' (=राम बोलो) वंदना सूचक संस्कृत श्लोक से हुआ है । इसके उपरांत लंकाकांड के प्राय: प्रत्येक अध्याय के आदि और अंत में राम के महत्त्वासूचक पद संयोग किये गये हैं । मूल (अर्थात् बाल्मीकि रामायण) में लंकाकांड और उत्तरकांड में राम तथा रामायण के महत्व को दिखाया गया है । मूल रामायण के लंकाकांड में राम को परमब्रह्म के रूप में दिखाया गया है । कंदलि के रामायण में राम-रावण के युद्ध के समय राम को ईश्वर कहा गया है । यहाँ कंदलि ने कहा है -

श्रीरामक प्रशंसिला अनेक आनर्ग।
बाद्यभ शबदे पूरिला सप्तसर्ग ॥
ब्रह्मा आदि देवे स्तुति करिला बिस्तर।

पारिजात बरिषिला शिरर उपर ॥ 5411

(दत्तबरुवा2016:372)

(भावार्थ - श्रीराम की अनेक प्रशंसा की गयी । सातों स्वर्गों में वाद्य के शब्द गूंजने लगे । ब्रह्मा आदि देवों ने भी उनकी स्तुति की । उनके ऊपर पारिजात की वृष्टि हुई ।)

सीता की अग्नि परीक्षा के समय भी ब्रह्मा आदि सभी देवताओं ने परमेश्वर के रूप में राम की आराधना की है । लेकिन यह सब मूल रामायण का ही अनुकरण है। इस कांड के अंत में राम के महत्व को कंदलि ने संयोजित किया है । राम-रावण के युद्ध में भी दिखाया गया है कि राम साहसी, सत्यवान तथा न्याय के देवता हैं । अंत में यह भी कहा गया है कि राम के हाथों जिनकी भी मृत्यु हुई, उन सभी को परम मुक्ति मिली है । इस कांड में राम के वीरत्व तथा पराक्रम को दिखाया गया है । एक महाप्रतापी योद्धा की भाँति राम युद्ध में विजयी होकर सीता, लक्ष्मण, हनुमान सहित अयोध्या लौट आए थे । कंदलि ने इस कांड के अंत में अपने साथ-साथ राजा महामाणिक्य का भी परिचय कराया है और साथ ही अपनी रचना-रीति का भी बोध कराया है ।

निष्कर्ष

निष्कर्षत: यह कह सकते हैं कि माधव कंदलि का रामायण प्राक-शंकरी युग की उल्लेखनीय कृति है । जिस समय असम में लिखित असमीया साहित्य का कोई निश्चित निदर्शन नहीं था, उसी समय कंदलि का रामायण जैसा महाकाव्य रचना करने का कार्य महान है । कंदलि-कृत रामायण में राम एक साधारण मनुष्य है, तो दूसरी ओर परमेश्वर भी हैं । एक ओर राम ने बाली को छल से वध किया, तो दूसरी ओर यह भी कहा है कि राम के हाथों मरनेवालों को परम मुक्ति प्राप्त होती है । इसीलिए राम के चरित्र पर विचार करना बहुत ही रोचक और जटिल है, राम एक ऐतिहासिक विवर्तमान चरित्र है ।

ग्रंथ-सूची :

दत्तबरुवा,हरिनारायण,संपा. सप्तकांड रामायण, चौदहवाँ.गुवाहाटी: दत्तबरुवा पब्लिशिंग कोंपनी प्राइवेट लिमिटेड, 2016.

नाथ , त्रैलोक्य मोहन. रामायणी साहित्यर अध्ययन, पाहि प्रकाश: गुवाहाटी, 2019.

शर्मा शशी. माधव कंदलिर रामायण, पंचम. गुवाहाटी:जार्नल एम्परियाम, 2011.

संपर्क-सूत्र
शोधार्थी,असम विश्वविद्यालय
ई-मेइल: dasananya484@gmail.com
मोबाइल: 8638618390